Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 11, 2026 (Special Issue 2): Pg. No. 7-11
Peer Reviewed Journal

Research Article

भारतीय ज्ञान परंपरा की समकालीन प्रासंगिकता

शाश्वत चन्देल

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उत्तर प्रदेश
DOI: https://doi.org/ 10.24321/2456.0510.202627

I N F O

E-mail Id:
singhchandelmanish@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0009-8132-371X
How to cite this article:
शाश्वत चन्देल, सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभागए दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालयए गोरखपुरए उत्तर प्रदेश, Anu: a, Mul, Int, Jour, *Vol 11, 2026 (Special Issue 2): Pg. No. 7-11*

Date of Submission: 2026-09-02

Date of Acceptance: 2026-10-11

A B S T R A C T

भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) मात्र अतीत की गौरवशाली विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान युग के बहुआयामी वैश्विक संकटों के समाधान की एक जीवंत और व्यावहारिक जीवन-धारा है। आज का आधुनिक समाज जहाँ एक ओर अभूर्व तकनीकी प्रगति और भौतिक समृद्धि के शिखर पर है, वहीं दूसरी ओर यह गंभीर पर्यावरणीय क्षरण, मानसिक अवसाद, सामाजिक विखंडन और नैतिक पतन जैसी चुनौतियों से भी जूझ रहा है।

इस परिप्रेक्ष्य में, प्राचीन भारतीय प्रज्ञा विज्ञान और आध्यात्मिकता, व्यक्ति और समाज, तथा विकास और प्रकृति के बीच एक समग्र और संतुलित दृष्टिकोण (Holistic Approach) प्रस्तुत करती है। यह शोध-पत्र समकालीन संदर्भों में चिकित्सा (आयुर्वेद व योग), शिक्षा (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020), पर्यावरण संरक्षण (प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व) और सतत अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में पारंपरिक ज्ञान के अनुप्रयोगों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। साथ ही, यह वैश्विक शांति और बंधुत्व के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसी मौलिक अवधारणाओं की समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, समकालीन प्रासंगिकता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सतत विकास, आयुर्वेद और योग, वसुधैव कुटुम्बकम्, समग्र दृष्टिकोण।

Copyright (c) 2026: Author(s). Published by Advanced Research Publications

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम, समृद्धतम और अनवरत प्रवाहित होने वाली वैचारिक एवं वैज्ञानिक धाराओं में से एक है। यह केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा (आयुर्वेद), पर्यावरण, सुशासन, धातु विज्ञान और सामाजिक दर्शन का ऐसा विस्तृत भंडार है जिसने सदियों तक वैश्विक चेतना का मार्गदर्शन किया है।[1]

आधुनिक युग में जब विश्व जलवायु परिवर्तन, मानसिक अशांति, उपभोक्तावादी होड़ और सामाजिक विखंडन जैसी गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा है, तब भारतीय दृष्टि—जो समग्रता (Holism) और अंतर्संबंधों पर आधारित है—अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल तत्वों का विश्लेषण करता है और वर्तमान समय में इसकी व्यावहारिक उपयोगिता तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के संदर्भ में इसकी भूमिका को रेखांकित करता है।

ऐतिहासिक संदर्भ और ज्ञान का वर्गीकरण

प्राचीन भारत में ज्ञान को संकुचित दायरों में नहीं बांटा गया था। मुण्डकोपनिषद् में ज्ञान को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है:[2]

- परा विद्या (Higher Knowledge): वह आध्यात्मिक ज्ञान जो ब्रह्म, आत्मा और परम सत्य की अनुभूति कराता है, जिससे जीवन के अंतिम उद्देश्य (मोक्ष) की प्राप्ति होती है।
- अपरा विद्या (Lower/Secular Knowledge): वह व्यावहारिक और भौतिक ज्ञान जिसमें चारों वेद, वेदांग, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष, गणित और विभिन्न कलाएं शामिल हैं।

यह वर्गीकरण दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति में भौतिक उन्नति (अभ्युदय) और आध्यात्मिक चेतना (निःश्रेयस) दोनों को समान महत्व दिया गया था। यही कारण है कि प्राचीन नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में खगोलशास्त्र और दर्शनशास्त्र एक साथ पढ़ाए जाते थे।

पर्यावरण संरक्षण और संधारणीय विकास (Sustainable Development)

वर्तमान वैश्विक समुदाय सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहा है। पाश्चात्य दृष्टिकोण ने प्रकृति को एक 'उपभोग की वस्तु' (Resource) माना, जिससे अंधाधुंध दोहन हुआ। इसके विपरीत, भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकृति को माता और जीवंत मानती है।[3]

अथर्ववेद का भूमि सूक्त कहता है—'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' अर्थात पृथ्वी मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। यह भावना प्रकृति के शोषण के स्थान पर उसके पोषण पर बल देती है। ईशावास्योपनिषद् का पहला श्लोक 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' (त्याग पूर्वक भोग करो) हमें यह सिखाता है कि हम प्रकृति से केवल उतना ही लें जितना हमारी आवश्यकता है, न कि हमारे लालच के लिए।[4]

इसके अतिरिक्त, भारतीय दर्शन में 'ऋत' (Cosmic Order) की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि ब्रह्मांड का हर तत्व एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। यदि हम एक हिस्से को नुकसान पहुँचाते हैं, तो पूरी व्यवस्था प्रभावित होगी। आज के इको-फेमिनिज्म और डीप इकोलॉजी जैसे आधुनिक सिद्धांत इसी वैदिक अवधारणा के करीब पहुँच रहे हैं।

स्वास्थ्य, आयुर्वेद और जीवनशैली

कोरोना महामारी के बाद वैश्विक स्तर पर निवारक स्वास्थ्य देखभाल (Preventive Healthcare) की मांग बढ़ी है। भारतीय चिकित्सा पद्धति—आयुर्वेद—केवल बीमारी के इलाज तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक संपूर्ण कला है।[5]

आयुर्वेद का मूल सिद्धांत है 'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं आतुरस्य विकार प्रशमनं च' अर्थात् स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी के रोग का निवारण करना। दिनचर्या, ऋतुचर्या और सात्विक आहार के नियम व्यक्ति को प्राकृतिक रूप से प्रतिरोधी बनाते हैं।

इसी प्रकार, महर्षि पतंजलि का अष्टांग योग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) आज के मानसिक तनाव और अवसाद से ग्रस्त समाज के लिए एक संजीवनी है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह मन, बुद्धि और आत्मा के सामंजस्य का विज्ञान है जिसे आज आधुनिक न्यूरोसाइंस भी स्वीकार कर रहा है।[6]

विज्ञान, गणित और तकनीकी चेतना

प्रायः यह भ्रम फैलाया जाता है कि भारत केवल एक रहस्यवादी और आध्यात्मिक देश था, जबकि विज्ञान और गणित में भारत का योगदान अत्यंत क्रांतिकारी रहा है।[7]

- गणित और खगोलशास्त्र: आर्यभट्ट ने शून्य (0) की अवधारणा और दशमलव प्रणाली का प्रतिपादन किया, जिसके बिना आधुनिक कंप्यूटर विज्ञान की कल्पना भी असंभव है। उन्होंने पृथ्वी की परिधि की सटीक गणना की और सूर्य ग्रहण व चंद्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों को स्पष्ट किया। भास्कराचार्य और ब्रह्मगुप्त ने न्यूटन से सदियों पहले गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांतों का संकेत दिया था।
- धातुकर्म (Metallurgy): दिल्ली का लौह स्तंभ (Iron Pillar), जो 1600 वर्षों से अधिक समय से बिना जंग लगे खुला खड़ा है, प्राचीन भारतीय रसायन विज्ञान और धातुकर्म की उन्नत अवस्था का साक्षात प्रमाण है।
- वास्तुकला (Architecture): शिल्पशास्त्र और समरांगण सूत्रधार जैसे ग्रंथ यह दर्शाते हैं कि प्राचीन भारतीय निर्माण विज्ञान कितना व्यवस्थित और भूकंप-रोधी था।

सुशासन और कौटिल्य का अर्थशास्त्र

आधुनिक कॉर्पोरेट जगत और राजनीतिक प्रणालियाँ नैतिक संकट से गुजर रही हैं। आचार्य चाणक्य (कौटिल्य) द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' केवल अर्थशास्त्र का ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह लोक कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की नियमावली है।[8]

कौटिल्य लिखते हैं: 'प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्' अर्थात् प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है और प्रजा के हित में ही उसका हित है। यह दर्शन आज के लोकतंत्र और लोक प्रशासन के लिए मार्गदर्शक है। भारतीय सुशासन परंपरा में राजा या शासक को 'स्वामी' नहीं बल्कि 'ट्रस्टी' (न्यासी) माना गया है, जो राष्ट्र की संपत्ति का संरक्षक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० (NEP 2020) और भारतीय ज्ञान परंपरा

भारत की आधुनिक शिक्षा प्रणाली लंबे समय तक मैकाले की औपनिवेशिक मानसिकता से प्रभावित रही, जिसने भारतीयों को अपनी ही संस्कृति से विमुख कर दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० इस विसंगति को दूर करने का एक ऐतिहासिक प्रयास है।[9]

NEP 2020 के तहत प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक भारतीय ज्ञान प्रणालियों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है। इसका उद्देश्य छात्रों में 'रटने की प्रवृत्ति' के स्थान पर 'तार्किक चिंतन' (Critical Thinking) विकसित करना है, जो प्राचीन उपनिषदों की संवाद शैली (Question-Answer Method) पर आधारित है। विद्यालयी स्तर पर वैदिक गणित, स्थानीय कलाओं, और पारंपरिक जल संचयन तकनीकों का समावेश किया जा रहा है ताकि युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़कर वैश्विक नागरिक (Global Citizen) बन सके।

समकालीन चुनौतियाँ और वैज्ञानिक प्रमाणीकरण

भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने के मार्ग में कुछ प्रमुख चुनौतियाँ भी हैं:[10]

- अंधविश्वास बनाम विज्ञान: प्राचीन ज्ञान के नाम पर कई बार बिना जांचे-परखे दावों को स्वीकार कर लिया जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम 'अंधानुकरण' के बजाय वैज्ञानिक पद्धति से उसका परीक्षण करें।
- भाषा की बाधा: भारत का अधिकांश पारंपरिक ज्ञान संस्कृत, पालि और प्राकृत भाषाओं में पांडुलिपियों (Manuscripts) के रूप में सुरक्षित है। इनका आधुनिक भाषाओं में सटीक अनुवाद और डिजिटलीकरण आवश्यक है।
- वैश्विक पेटेंट और बौद्धिक संपदा: हल्दी, नीम और बासमती चावल जैसे भारतीय उत्पादों के पेटेंट की लड़ाई यह दर्शाती है कि हमें अपने पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण (जैसे- TKDL: Traditional Knowledge Digital Library) मजबूत करना होगा।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, भारतीय ज्ञान परंपरा अतीत का कोई मृत अवशेष नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत और गतिशील विचारधारा है जो वर्तमान और भविष्य की वैश्विक समस्याओं का समाधान खोजने में पूर्णतः सक्षम है। यह परंपरा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (पूरा विश्व एक परिवार है) और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' (सभी सुखी हों) के सार्वभौमिक कल्याण की भावना पर आधारित है।

आज विश्व को एक ऐसे विकास मॉडल की आवश्यकता है जो भौतिक प्रगति के साथ-साथ नैतिक और आध्यात्मिक चेतना को भी समाहित करे। भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान का यह समन्वय ही २१वीं सदी में मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. कपिल कपूर और प्रो. ए.के. सिंह (२००५), 'इंडियन नॉलेज सिस्टम्स: थेओरिटिकल फ्रेमवर्क', डी.के. प्रिंटवर्ल्ड, नई दिल्ली।
2. स्वामी गंभीरानंद (अनुवादक), 'मुण्डकोपनिषद्: रामकृष्ण मठ प्रकाशन', कोलकाता, पृष्ठ ४५-४८।
3. प्रो. रामदेव भारद्वाज (२०१८), 'वैदिक पर्यावरण दर्शन और संधारणीय विकास', राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
4. आचार्य श्रीराम शर्मा (२०१०), '१८ उपनिषद् भाष्य: युग निर्माण योजना', मथुरा, पृष्ठ १२-१५।
5. डॉ. वामन शिवराम आप्टे (२०१२), 'चरक संहिता: सूत्रस्थानम', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।
6. महर्षि पतंजलि, 'योगसूत्र' (व्याख्याकार: स्वामी विवेकानंद), 'राजयोग', अद्वैत आश्रम, मायावती।

7. डॉ. विभूतिभूषण दत्त और डॉ. अवधेश नारायण सिंह (२०१६), 'हिस्ट्री ऑफ हिंदू मैथमैटिक्स', एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुंबई।
8. कौटिल्य, 'अर्थशास्त्र' (संपादक: डॉ. रघुनाथ सिंह), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण २०१४।
9. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (अब शिक्षा मंत्रालय), भारत सरकार, 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०', आधिकारिक दस्तावेज़।
10. वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR), 'पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (TKDL) रिपोर्ट २०१५', नई दिल्ली।